शौनक का ऋक्प्रातिशाख्य

- ❖ प्रातिशाख्य शिक्षा वेदांग के अन्तर्गत माने जाते हैं।
- ❖ प्रातिशाख्य में भी स्वरवर्णादियों के उच्चारण आदि विषय प्रतिपादित है।
- ❖ ऋग्वेद का प्रातिशाख्य ऋक्प्रातिशाख्य कहलाता है।
- ❖ ऋक्प्रातिशाख्य के कर्त्ता शौनक हैं।
- ❖ ऋक्प्रातिशाख्य पर उव्वट ने भाष्य भी लिखा है।
- ❖ ऋक्प्रातिशाख्य का विभाजन पटलों में है , तथा कुल १८ पटल इस ग्रन्थ में हैं।

॥ समानाक्षर ॥

१-अष्टौ समानाक्षराण्यादितः –

आरम्भ से ८ वर्ण (अ,आ,ऋ,ॠ,इ,ई,उ,ऊ) समानाक्षर कहे जाते हैं –

॥ सन्ध्यक्षर ॥

२-ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराणि –

उसके बाद ४ वर्ण (ए,ओ,ऐ,औ) सन्ध्यक्षर कहे जाते हैं।

॥ अघोष ॥

१- अन्त्यास्सप्त तेषाम् अघोषाः –

उष्म वर्णों (ह,श,ष,स,अः,~क,~प,अं) के अन्तिम सात वर्ण (श,ष,स,अः,~क,~प,अं)अघोष कहे जाते हैं।

२- वर्गे वर्गे च प्रथमावघोषौ –

सभी वर्गों के पहले तथा दूसरे वर्ण भी अघोष कहे जाते हैं। जैसे- क,ख,च,छ,ट,ठ,त,थ,प और फ।

कुल मिलाकर १७ वर्ण अघोष कहे जाते हैं।

॥ सोष्म ॥

युग्मौ सोष्माणौ

सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ (कुल १०) वर्ण सोष्म कहे जाते हैं। जैसे – ख,घ,छ,झ,ठ,ढ,थ,ध,फ और भ।

॥ स्वरभक्ति ॥

स्वरभक्तिः पूर्वभागक्षराङ्गम् –

स्वर के साथ रहने वाले र् और ल् पूर्वभाग में स्थित स्वर (अक्षर) के अङ्ग होते हैं। जैसे – अदर्शि जल्हव और शतवल्शः इन दोनों उदाहरणों में र् और ल् पूर्वाक्षर अ के अङ्ग होते हैं उसी तरह आर्ष्टिषेणः में स्थित र् पूर्वभाग के स्वर आ का अङ्ग होता है।

दीर्घ और ह्रस्व स्वरभक्ति का काल

द्राघीयसी सार्धमात्रा –

दीर्घ स्वरभक्ति अर्धमात्रा (आधी मात्रा) वाली होती है। जैसे प्रत्यु अदर्शि, वनस्पतये शतवल्शः, कर्हि, इत्यादि।

अर्धोनान्या –

अन्य (ह्रस्व) स्वरभक्ति आधे के आधे (१/४) मात्रा वाली होती है।

जैसे आर्ष्टिषेणः , वर्ष्यान्।

❖ यदि उदाहरण में र् या ल् के बाद एक ही व्यञ्जन आता हो तो वह दीर्घ स्वरभक्ति कहलाती है। और यदि र् या ल् के बाद दो या दो से ज्यादा व्यञ्जन आते हों तो तो वह ह्रस्व स्वरभक्ति कहलाती है।

॥ यम ॥

अत्र यमोपदेशः-

कण्ठादि स्थानों में यम का उपदेश किया जाता है। यह चार प्रकार के होते हैं –

१-अघोष अल्पप्राण – कँ, चँ, टँ, तँ और पँ।

२ अघोष महाप्राण – खँ, छँ, ठँ, थँ और फँ।

३- सघोष अल्पप्राण – गँ ,जँ, डँ, दँ और बँ।

४- सघोष महाप्राण – घँ, झँ, ढँ, धँ और भँ।

कुल मिलाकर २० वर्ण यम संज्ञक हैं।

॥ रक्त ॥

रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः –

अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं जैसे – ङ, ञ, ण, न और म।

॥ संयोग ॥

संयोगस्तु व्यञ्जनसन्निपातः –

व्यञ्जन वर्णों का मेल संयोग कहलाता है जैसे – प्र वस्त्रिष्टुभामिषम्

॥ प्रगृह्य ॥

ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यम् –

सम्बोधन के अन्त में स्थित ओकार प्रगृह्य कहलाता है। जैसे – भानो , विष्णो इत्यादि।

पदं चान्यः अपूर्वपदान्तगश्च –

अन्य पदों में स्थित हो तथा समास से पूर्व या अन्त में जो न हो ऐसा ओकार प्रगृह्य कहलाता है।

अस्मे युष्मे त्वे अमी च प्रगृह्याः –

अस्मे, युष्मे, त्वे और अमी ये चारों भी प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।

॥ रिफित ॥

उष्मा रेफी पञ्चमो नामि पूर्वः –

नामि (अ और आ से भिन्न स्वर वर्ण) के बाद आने वाले ऊष्म वर्णों (ह,श,ष,स,अः,~क,~प,अं) में पांचवें (विसर्ग) को रिफित कहते हैं।

जैसे - अग्निरस्मि जन्मना, पूर्वीरहं शरदः

महोऽपोवर्जमितरो यथोक्तम् –

महः और अपः से भिन्न अ अथवा आ के बाद आने वाले विसर्ग की रिफ़ित संज्ञा होती है।

अन्तोदात्तमन्तः –

अन्तः पद यदि अन्तोदात्त हो तो वह भी रिफित कहलाता है।